VIDYA
UNIVERSITY PRESS

सुगंधा

हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक

कक्षा 7

Teacher's Resource Book

सुगंधा–7

1. और भी दूँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (i)

2. (क) मस्तक (ख) बूँद (ग) संतुष्ट (घ) मोह

3. (क) धरती हमारा पालन–पोषण करती है इसीलिए उसे माँ शब्द से संबोधित किया गया है। उसने हमारे पालन–पोषण के लिए बहुत–सी चीजें दी हैं। अत: हम उसके ऋणी हैं।

(ख) कवि देश की धरती के लिए अपना तन–मन–जीवन समर्पित करना चाहता है, क्योंकि वह उसकी मातृभूमि है और अपनी मातृभूमि की रक्षा करना हम सबका परम कर्त्तव्य है।

(ग) कवि थाल में भाल सजाकर लाने को कह रहा है।

(घ) कवि अपनी मातृभूमि के लिए मोह के बंधन से मुक्त होने का इच्छुक है।

(ङ) कवि मातृभूमि की रक्षा के लिए तलवार माँजने की बात कर रहा है

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) लाऊँ सजाकर (ख) माँज दो, लाओ

(ग) मल दो (घ) दे दो

(ङ) थमा दो

5. जब भी थाल में अपना मस्तक सजाकर लाऊँ तो उसे स्वीकार कर लेना। मैं अपनी उम्र का एक–एक क्षण वतन के लिए समर्पित करना चाहता हूँ।

6.

धरती	— भू	धरा	पृथ्वी
भाल	— मस्तक	ललाट	सिर
ऋण	— कर्ज	उधार	देनदारी
घर	— भवन	आँगन	सदन
सुमन	— पुष्प	फूल	कुसुम

7. (क) आकाश (ख) उल्टे (ग) काँटे (घ) मरण (ङ) जल्दी

8. (क) धरती — धरती गोल है।

(ख) मोह — बच्चों का मोह छोड़कर देश की रक्षा करो।

(ग) ध्वज — हिमालय के उच्च शिखर पर ध्वज फहरा दो।

(घ) ऋण — माँ का ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता।

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

2. झूठ का सच

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv)

2. (क) गोनू झा मित्रों के सामने तगादा इसलिए करता था ताकि वक्त पड़ने पर वह उनको गवाह बना सके।

(ख) मित्र को गोनू झा के द्वारा रोज-रोज तगादा करने की बात से खीज होती थी।

3. (क) 3 (ख) 6 (ग) 1 (घ) 2

(ङ) 5 (च) 4

4. (क) गोनू झा ने मित्र से मिट्टी के एक हजार सिक्कों की माँग की।

(ख) गोनू झा के मित्र ने उससे उत्सुकता से पूछा कि मित्र, मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।

(ग) गोनू झा ने पंचों के सामने फरियाद की, ''यह मेरा लँगोटिया यार है; इसने मुझसे एक हजार सिक्के शीघ्र लौटाने की शर्त पर छः महीने पूर्व लिए। पाँच सौ सिक्के तो शीघ्र ही लौटा दिए और शेष से मुकर रहा है।''

(घ) गोनू झा दोस्तों के सामने मित्र को पाँच सौ सिक्कों के बाकी रहने की याद दिलाते थे।

(ङ) मित्र गोनू झा का नाम सुनकर इसलिए भड़क उठता था, क्योंकि उसे पंचों के सामने मिट्टी के पाँच सौं सिक्कों के स्थान पर असली के सिक्के लौटाने पड़े थे और साथ ही बदनाम और बेइज्जत भी होना पड़ा था।

(च) बटुआ दिखाकर गोनू झा इस सत्य को सिद्ध करना चाहता था कि वास्तव में मित्र के और मेरे बीच जो बात हुई थी उस बात का यह बटुआ प्रमाण है।

(छ) गोनू झा के मित्र का माथा इसलिए उनका कि फिर वह उसके साथ कोई खुराफात तो नहीं करने वाला है।

(ज) गोनू झा ने अपने और मित्र के बीच हुई बातचीत और सिक्कों की सच्चाई का भेद खोलने तथा मित्र के मन की मलिनता को साफ करने के लिए मित्र की दुकान पर गणमान्य व्यक्तियों को बुलाया।

❐ व्याकरण-बोध

5.

तत्सम	**विदेशी**	**देशज**
शंका	अजीज	लँगोटिया
बद्धमूल	फरियाद	बटुआ
मति	बावजूद	स्वाँग

6. (क) ही (ख) भी (ग) भर (घ) मात्र
(ङ) भी (च) तो

7. 1. अध्यापक ने पाठ पढ़ाया। 2. चित्रकार ने चित्र बनाया।
3. विद्यार्थियों ने गृहकार्य कर लिया। 4. मोहन ने मैच जीता।
5. निशा ने गीत गाया।

8. (क) कैसा-कैसा — बाहर चलकर पता करो कि लोग कैसा-कैसा बरताव करते हैं।
(ख) जब-जब — मैं जब-जब तुम्हारे घर जाता हूँ, तुम गायब ही रहते हो।
(ग) बदले-बदले — मोनू आज क्या बात है? बहुत बदले-बदले नजर आ रहे हो।
(घ) कभी-कभी — कभी-कभी तो सबसे गलती होती है।
(ङ) रोज-रोज — रोज-रोज दुकान में लाइन लगानी पड़ती है।
(च) ना-ना — कन्हैया के ना-ना करने के उपरांत भी गोपिकाओं ने उन्हें रँग डाला।

9. ना = नासमझ, नापसंद
बे = बेहिसाब, बेदखल
बा = बाकायदा, बाइज्जत
बद = बदमाश, बदसूरत

❐ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

3. सिंदबाद

❐ पाठ-बोध

1. (क) गठरियाँ कई थीं। एक में सोने के सिक्के बँधे थे।

(ख) सिंदबाद को सोना स्मगलर समझकर घेर लिया गया था।

(ग) सिंदबाद को कस्टम अधिकारी पुलिस स्टेशन ले जा रहे थे।

2. (क) सिंदबाद की प्रसिद्धि का कारण उसका व्यापार था

(ख) पहले सफर में जहाज के कप्तान ने सिंदबाद को बहुत बड़े कछुए की पीठ को एक टापू समझकर उस पर उतार दिया था।

(ग) एयर टर्मिनल पर सिंदबाद अपने सामान का इंतजार कर रहा था।

(घ) सिंदबाद ने हवाई यात्रा का निर्णय इसलिए लिया जिससे कि हिंदुस्तान के लोग उसे निहायत पिछड़ा हुआ न माने। दूसरे, अपनी पहली यात्रा जैसी मुसीबत से बचने के लिए।

(ङ) कुली द्वारा बख्शीश माँगने पर सिंदबाद को यह हैरत हुई कि हिंदुस्तान का आदमी भिखमंगा कैसे हो गया! यह तो 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला देश है।

(च) होटल में सिंदबाद के साथ यह हुआ कि जब उसने वहाँ प्रवेश किया तो गलती से उसका हाथ एक बटन पर पड़ गया और अचानक आवाज गूँजने लगी। सिंदबाद घबरा गया। उसने कमरे में लगे सारे बटन दबा दिए। किसी से बत्ती जली, किसी से पंखा चला, किसी से घंटी बजी तो किसी से एयरकंडीशनर चला। सिंदबाद पसीने-पसीने हो गया। दहशत के मारे चेहरा सूख गया। बैरे ने आकर स्विच बंद किए। सिंदबाद खिसियाना होकर तौलिए से अपना मुँह पोछने लगा।

(छ) सिंदबाद ने भारत से वापस जाने का कारण हिंदुस्तान की तरक्की बताया।

(ज) प्रौद्योगिकी इतनी आगे बढ़ चुकी है कि इंसानों की जगह मशीनें लेती जा रही हैं। मेरे विचार से एक समय ऐसा आएगा कि जब सभी कार्य मशीनों से ही होंगे। परिणाम यह होगा कि बिना मशीन के व्यक्ति साँस तक नहीं ले सकेगा और बेमौत मारा जाएगा।

(झ) सिंदबाद के छूटे हुए सामान को लेकर टैक्सी वाले के मन में यह नैतिक विचार आया कि यह सामान वह पुलिस स्टेशन में जमा कर दे तथा अनैतिक विचार यह आया कि यदि वह इसे न जमा करे और सारा सामान घोट जाए तो किसी को क्या पता चलेगा। यदि मैं उसकी जगह होता तो मैं भी सारा सामान पुलिस स्टेशन पर पहुँचाता जिससे उसका सामान उस तक पहुँच सके, क्योंकि मैं अपने देश का नाम गंदा नहीं होने देता।

❒ व्याकरण-बोध

3. (क) धनवान (ख) रँगीला (ग) वैज्ञानिक (घ) प्राकृतिक
(ङ) ममेरे (च) दार्शनिक

4. (क) प्रमाणसहित बातें किया करो।
(ख) मेरी बात को सुनो तो सही।
(ग) सब्जी में मिर्च मिलाओ।
(घ) सभा में अनेक लोग बैठे थे।
(ङ) गाय का शुद्ध दूध लाओ।
(च) रामू को आम काटकर प्लेट में रखकर दो।

❒ योग्यता-विस्तार

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

4. बूढ़ा कुत्ता

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (ii)

2. (क) (2) (ख) (4) (ग) (5) (घ) (1) (ङ) (3)
(च) (6) (छ) (7)

3. (क) **भाव**—लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक कुत्ता छोटा पिल्ला था तो उसकी हमें सुरक्षा करनी पड़ती थी, किंतु जवान और सबल हो जाने पर आज वह हमारी सुरक्षा करने लगा है।

(ख) **भाव**—लेखक कुत्ते को एक वीर योद्धा यानी अभिमन्यु की उपमा देते हुए कहता है कि जिस प्रकार वीर अभिमन्यु सारे योद्धाओं को पराजित करते हुए चक्रव्यूह के सातवें द्वार तक पहुँच गया था उसी प्रकार उसका कुत्ता भी सारी बाधाओं को पार कर सुबह तक घर आ गया।

4. (क) कुत्ते से लेखक का परिचय तब हुआ जब वह पिल्ला था और कहीं से भटककर चैत की दोपहर में घायल अवस्था में लेखक की खाट के नीचे आ गया था।

(ख) गाँव के कुत्तों का व्यवहार इस कुत्ते के प्रति शुरू-शुरू में बुरा रहा किंतु बाद में अच्छा हो गया।

(ग) बूढ़े कुत्ते की दशा बहुत बुरी हो गई थी। सारे शरीर में खौरा लग गया था, जिसे पंजों से खरौंदकर उसने घाव कर लिए थे। उससे बदबू आने लगी थी। वह सारा सम्मान खो चुका था।

(घ) खेत में बने लेखक के घर की रखवाली कुत्ता बड़ी वफादारी से सारी रात एक संतरी की तरह जागकर करता था।

(ङ) लोग बूढ़े कुत्ते के साथ बड़ा ही बुरा व्यवहार करते थे। उसे बार-बार दुत्कारा-पटकारा जाता था। इस पर भी न भागने पर उसकी झाड़ू और डंडों से पिटाई की जाती थी।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) टूट पड़े — (ख) घोड़े बेचकर सोने लगे
(ग) आँखों से ओझल हो गया — (घ) गला फाड़कर चिल्लाने लगा
(ङ) नाम न लेना

6. (क) हिंसा × अहिंसा ¦ नश्वर × अमर
(ख) सगुण × दुर्गुण ¦ पवित्र × अपवित्र

7.

नजदीक	—	पास	आवाज	—	ध्वनि
बरबाद	—	तबाह	जख्म	—	घाव
हिम्मत	—	साहस	हालत	—	स्थिति

8. दुत्कार-फटकार—दुत्कार और फटकार ¦ आती-जाती—आती और जाती
मोटा-ताजा—मोटा और ताजा ¦ दिन-रात—दिन और रात
दही-भात—दही और भात ¦ करुण-सजल—करुण और सजल

9. अमर्कक क्रिया के वाक्य—1. शरीर से बदबू आती है।
2. यह बैठ जाता है।
सकर्मक क्रिया के वाक्य—1. समूची देह में खौरा लग गया।
2. मैं भी खाट पर सो गया।

10. (क) बाहर (ख) नीचे (ग) पीछे-पीछे (घ) धीरे-धीरे
(ङ) थोड़ा (च) घबराकर (छ) अचानक

❐ योग्यता-विस्तार

11. विद्यार्थी स्वयं करें।
12. विद्यार्थी स्वयं करें।
13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

14. विद्यार्थी स्वयं करें।
15. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

5. लीक पर वे चलें

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iii)

2. भाव—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि पहले से बने हुए रास्तों का अनुसरण वही व्यक्ति करते हैं जिनके पैर कमजोर और थके होते हैं। हमें तो हमारी यात्रा से बनने वाले रास्ते ही प्यारे हैं। बाँस के झुरमुटों से बाधित रास्ते और उन पर बहने वाली हवा ही हमारी यात्रा के साक्षी हैं, क्योंकि हमारी उम्मीदें उन्हीं से बँधी हुई हैं। तात्पर्य यह है कि साधारण तथा डरपोक व्यक्ति ही पुरानी परंपराओं का अनुसरण करते हैं, किंतु साहसी व्यक्ति अपना रास्ता स्वयं बनाते हैं। उनके जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ ही उनका उत्साहवर्धन करती हैं।

3. (क) कवि थके हुए तथा कमजोर पैरों वाले व्यक्तियों को लीक पर चलने के लिए कह रहा है।

(ख) कवि को स्वयं की यात्रा से बनने वाले अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

(ग) कवि ने अपने द्वारा बनाए मार्गों का साक्षी पीले बाँस के झुरमुट और उन पर बहती हवा को बताया है।

(घ) कवि ने ताड़ के पेड़ों की तुलना हिलती क्षितिज की झालरों से की है।

(ङ) कवि अपने संकल्प के सहारे जीवित है।

(च) कवि के सपने पीले बाँस के झुरमुट से लिपटे हैं।

❐ व्याकरण-बोध

4. सम् + कल्प + ना = संकल्पना दूर् + बल + ता = दुर्बलता

5. वाद्य—व् + आ + द् + य् + अ

अल्हड़—अ + ल् + ह् + अ् + ड् + अ

दुर्बल —द् + उ + र् + ब् + अ + ल् + अ

मंडली—म् + अ + ण् + ड् + अ + ल् + ई

6. (क) डाल पर पक्षी चहचहा रहे हैं।

(ख) कवि को स्वयं बनाए मार्ग प्यारे हैं।

(ग) रात मैंने एक डरावना सपना देखा।

(घ) जो गर्व से आसमान थामे खड़े हैं।

(ङ) नदी का स्वच्छ जल ही मनुष्य को जीवन देता है।

(च) डाकू गौतम बुद्ध के पैरों में गिर गया।

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. क्या मैंने गलत कहा?

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

2. (क) साधना ने चंद्रमा और पृथ्वी को भाई-बहन इसलिए कहा, क्योंकि पृथ्वी हमारी माँ है और चंद्रमा को हम मामा कहते हैं।

(ख) निशि का तकिया कलाम था—'चश्मा लगाकर देखे तो'।

(ग) शिक्षिका ने 'जस्ट लाइक ए गुड गर्ल' इसलिए कहा, क्योंकि निशि ने किसी बात पर जलने-कुढ़ने की बजाय उसे खेल-खेल में सुलझा लिया था।

(घ) शिक्षिका को ऐसा इसलिए सोचना पड़ा, क्योंकि उन्हें प्रश्नों का जवाब विषय से हटकर मिलता था।

(ङ) 'परीक्षा में तुम्हारे नंबर भी गोल होंगे'—शिक्षिका को ऐसा निशि का जवाब सुनकर कहना पड़ा।

(च) विद्यार्थी शिक्षिका के प्रश्नों का सही उत्तर इसलिए नहीं दे रहे थे, क्योंकि उस दिन 'पहली अप्रैल' थी।

(छ) हर वस्तु की उत्पत्ति के पीछे एक धार्मिक कहानी जुड़ी होने के कारण धर्म की दृष्टि से उत्तर अलग हो जाते हैं।

3. 'ग्रह' का अर्थ है — नक्षत्र तथा 'गृह' का अर्थ है—घर।

गृह कार्य — बच्चों को गृह कार्य में माँ-बाप का हाथ बँटाना चाहिए।

ग्रह कार्य — 'नासा' के वैज्ञानिक पूरी तरह ग्रह कार्य में लिप्त हैं।

(क) फूल — फूल में भौंरा बैठा है।
फुल — स्कूटर की टंकी फुल है।

(ख) उतर — गंगा पहाड़ों से उतरकर अपना विकराल रूप ले लेती है।
उत्तर — मेरे पूछे हुए प्रश्न का उत्तर दीजिए।

(ग) जवान — जो जवान देश के लिए शहीद हो जाता है वह सदा-सदा के लिए अमर हो जाता है।
जबान — जो लोग जबान सँभालकर नहीं बोलते उन्हें बाद में पछताना पड़ता है।

(घ) दावे — यह बात मैं दावे के साथ कहता हूँ कि विज्ञान ही एक दिन विनाश का कारण बनेगा।
दाबे — हारिल पक्षी अपने पंजे से हमेशा तिनका दाबे रहता है।

4. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (i)
(ङ) (ii) (च) (iii)

5. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iv)
(ङ) (iii)

6. (क) अभ्यास-पुस्तिका (ख) सही (ग) बाजार
(घ) चबूतरा (ङ) अवधि (च) अवश्य

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

7. समय-नियोजन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. (क) गांधीजी के पास लोगों का ताँता लगा रहता था। बड़ी-बड़ी सभाओं में उन्हें शामिल होना पड़ता था, किंतु फिर भी वे अपने प्रत्येक कार्य के लिए समय निकाल लेते थे। लेखक ने इसीलिए कहा है कि गांधीजी कम व्यस्त नहीं रहते थे।

(ख) गांधीजी जो कार्य करते थे वे इस प्रकार हैं—दार्शनिकों से मुलाकात करना, देश-विदेश के पेचीदा मामलों में विचार-विनिमय करना, अखबारों के लिए लेख लिखना, प्रात: भ्रमण करना तथा पत्रों के लिए जवाब हाथ से लिखकर देना।

(ग) गांधीजी अपने पत्रों के जवाब हाथ से लिखकर इसलिए देते थे, क्योंकि उस समय मशीनों (कंप्यूटर आदि का) इतना विकास नहीं हुआ था।

(घ) गांधीजी के जिन दो कार्यों का समय हमेशा निश्चित रहता था, वे हैं—1. प्रार्थना-सभा में शामिल होना तथा 2. प्रात: भ्रमण करना।

3. (क) **भाव**—जो व्यक्ति समय को पहचानता है, उसकी कद्र करता है वही व्यक्ति जीवन में सफलता हासिल कर सकता है। इसलिए समय का पालन करो। उसके साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने का प्रयास करो।

(ख) **भाव**—समय और लहरें किसी का इंतजार नहीं करती। जो समय एक बार निकल गया वह दोबारा नहीं आता। लहरें भी कभी पीछे नहीं मुड़तीं। अत: समय और लहरों के बहाव को जानो।

4. (क) लेखक के अनुसार व्यायाम, चिंतन तथा अध्ययन को समय देकर ही हमारा तन-मन स्वस्थ और सबल बनता है।

(ख) गांधी जी समय-नियोजन के द्वारा व्यस्तताओं के बीच भी पत्रों के उत्तर देते थे।

(ग) हमारे अनुसार, गांधीजी और नेहरू जी समय का उचित विभाजन करके सभी काम समय से पूर्ण करते थे।

(घ) साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना विद्यार्थियों के लिए इसलिए आवश्यक है ताकि वे एक अच्छे नागरिक बनकर जीवन में सफलता हासिल कर सकें।

(ङ) विद्यार्थी-जीवन में समय-नियोजन को कई कारणों से महत्त्व दिया गया है—

1. उन्हें एक लंबा जीवन जीना है।
2. सफलता की ऊँची-ऊँची मंजिलें तय करनी हैं।
3. विद्यार्थियों को जो आदतें पड़ जाती हैं वे जीवन-पर्यन्त बनी रहती हैं।

(च) लेखक ने धन की अपेक्षा समय को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है, क्योंकि धन तो आता-जाता रहता है, किंतु समय फिर वापस नहीं आता।

(छ) समय-सारणी बनाने से यह लाभ होता है कि सभी काम समय से पूर्ण हो जाते हैं और साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा खेल-कूद आदि के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।

(ज) मनुष्य जीवन में सुख, समृद्धि और शांति की कामना करता है, जो उसे निरंतर प्रयास करने पर ही मिल सकती हैं।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) (iii) (✓) (ख) (i) (✓) (ग) (iv) (✓) (घ) (ii) (✓)

6. (क) दैनिक (ख) समय-नियोजन (ग) समयाभाव
(घ) विद्यार्थी (ङ) प्रधानमंत्री (च) जीवनपर्यंत

7. (क) ठीक (रीतिवाचक) (ख) कोने-कोने से (स्थानवाचक)
(ग) पर्याप्त समय (कालवाचक) (घ) प्रात:काल (कालवाचक)
(ङ) न जाने कहाँ (रीतिवाचक)

8. (क) संबंध कारक (ख) करण कारक (ग) संप्रदान कारक
(घ) कर्म कारक (ङ) अधिकरण, करण कारक।

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

8. स्कूल मुझे अच्छा लगा!

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (i)

2. (क) नए स्कूल के गेट के दो खम्भे असल में **पेड़** थे।

(ख) स्कूल के कमरों की जगह **रेलगाड़ी** के बेकार डिब्बे काम में लाए जाते थे।

(ग) तोत्तो-चान के डैडी के पास ढेरों **वायलिन** थे।

(घ) तोत्तो-चान के कपड़े इसलिए फटते थे, क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में **झाड़ियों** के बीच में से घुसती थी।

(ङ) नए स्कूल के हेडमास्टर मि० **सोसाकु कोबायाशी** थे।

3. (क) तोत्तो-चान ने हेडमास्टर को स्टेशन मास्टर इसलिए कहा, क्योंकि अगर वे सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं तो वे स्टेशन मास्टर हुए।

(ख) तोत्तो-चान को नया स्कूल इसलिए अच्छा लगा, क्योंकि वह रेल के डिब्बों में चलाया जा रहा था।

(ग) रेलगाड़ी के डिब्बों में स्कूल चलाना एक अनूठी बात थी, क्योंकि ऐसा स्कूल पहली बार देखा जा रहा था।

(घ) तोत्तो-चान ने अपनी फ्रॉक के विषय में हेडमास्टर से बताया कि माँ नहीं जानती कि उसकी फ्रॉकें झाड़ियों और कँटीले तारों के नीचे से निकलने में फट जाती हैं। इसलिए उसे यह नई खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी।

(ङ) तोत्तो-चान को हेडमास्टर जी से बात करना इसलिए अच्छा लगा, क्योंकि उन्होंने उसकी बातें बड़ी रुचि से सुनी थीं।

(च) 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' का अभिप्राय है—अलग-अलग स्थानों का अलग-अलग खानपान।

(छ) माँ ने तोत्तो-चान के लिए यह प्रार्थना की कि इस बार सब शुभ हो।

(ज) तोत्तो-चान को स्कूल जाते देख माँ की आँखें इसलिए भर आईं, क्योंकि उनकी चुलबुली बिटिया जो हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी, आज इतनी खुशी से स्कूल जा रही थी।

(झ) तोत्तो-चान स्कूल जाने के लिए इसलिए उत्सुक थी क्योंकि उसे यह स्कूल अच्छा लगा था।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) विश्वसनीय (ख) स्थावर (ग) तैराक
(घ) छात्रा (ङ) अध्यापक।

5. (क) ने, का (ख) के, में (ग) पर
(घ) की (ङ) में, से

6. (क) अर्थ — संरक्षण देना।
वाक्य-प्रयोग — जिसके सिर पर गुरुजी ने हाथ रख दिया समझो उसका उद्धार हो गया।

(ख) अर्थ — प्रसन्न होना।
वाक्य-प्रयोग — माँ का प्यार पाकर बच्चा किलकारियाँ मारने लगा।

(ग) अर्थ — स्वीकृति, अस्वीकृति के लिए संकेत करना।
वाक्य-प्रयोग — अध्यापक ने कहा, ''बच्चों, सिर हिलाते रहोगे या समझ में भी आ रहा है।''

(घ) अर्थ — धैर्य धारण करना।
वाक्य-प्रयोग — साहूकार के रोज-रोज के तकादे को देखकर रामू ने कहा, धीरज धरो मैं फसल बेचकर पैसा दे दूँगा।

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

9. मुखिया जी की शिकार कथा

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iii)

2. (क) मुखिया जी को मरने से डर लगता है, किंतु इंतजार से नहीं, क्योंकि इसी से तो वे जनता को बाँधकर रखते हैं।

(ख) जनता ने मुखिया जी का भरपूर सहयोग किया, लेकिन उनके दिमाग की तरफ किसी का ध्यान नही गया। यानी ऐसा व्यक्ति मुखिया बनने के काबिल है भी या नहीं।

(ग) मुखिया जी का अपना स्वार्थ सिद्ध होना चाहिए, इसके लिए वे कहीं पर भी नहीं चूकते।

(घ) मुखिया जी से भी भ्रष्ट और हिंसक व्यक्ति जब मुखिया जी को मारकर राजनीति का चोला पहनकर जनता के सामने आ जाता है तो वह और भी बड़ा नेता बन जाता है।

3. (क) मुखिया जी के रहते हुए गाँव वालों के हालात बुरे थे यानी वे दुखी थे।

(ख) मुखिया जी को अचानक ही शिकार की तलब लगी।

(ग) जब भेड़िया माँद से बाहर नहीं आया तो मुखिया जी ने कहा कि मैं माँद के मोखले में मुँह देकर सीटियाँ बजाता हूँ और किसी तरह भेड़िये को बाहर लाता हूँ।

(घ) मुखिया जी को सिरविहीन देखकर शिकारी आपस में बातें करते हैं कि याद करो, शिकार पर आते समय मुखिया जी का सिर था भी या नहीं।

(ङ) हलवाई ने शिकारी दल को पुकारकर कहा कि सुनो भाई! मेरा नाम नन्नू हलवाई है। मेरे यहाँ वे जलेबियाँ खाते थे इसका मतलब है कि मुँह तो था लेकिन सिर के बारे में मुझे नहीं मालूम। उनकी पत्नी के पास जाओ, वे सब-कुछ जानती होंगी।

(च) सिरविहीन मुखिया जी को देखकर उनकी पत्नी ने कहा कि सिर की तो उन्हें कभी जरूरत ही नहीं पड़ी लेकिन इतना है कि खादी भवन से उनके लिए टोपियाँ जरूर लाती थी।

(छ) राजनीति पर इस एकांकी के माध्यम से इस प्रकार व्यंग्य किया गया है कि आज भ्रष्ट राजनीतिज्ञ जनता के साथ क्रूर अत्याचार कर रहे हैं और लोगों का शोषण करके खूब मौज उड़ाते हैं। जनता भी बिना सोचे-समझे ऐसे राजनीतिज्ञों का चुनाव कर लेती है जिनके पास दिमाग ही नहीं है।

(ज) **मुखिया जी का चरित्र-चित्रण**—मुखिया जी बड़े शौकीन व्यक्ति हैं। उनके गाँव के लोग दुखी हैं, किंतु मुखिया जी खूब मौज उड़ा रहे हैं। अपनी विलासिताओं को पूरा करने के लिए वे पैसे को पानी की तरह बहाते हैं, उन्हें किसी की कोई परवाह नहीं है।

मुखिया जी को मरने से बहुत डर लगता है, दूसरे की जान की उन्हें कोई परवाह नहीं है। अपनी बातों से लोगों को प्रभावित करने में वे बड़े माहिर हैं।

❒ व्याकरण-बोध

4. कुआँ — तालाब
रोजी — रोटी
घर — मकान
काम — धंधा

5. (क) यह दुकान पुरानी दवाइयों की है।
(ख) खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।
(ग) देश सुभाषचंद्र बोस का सदा आभारी रहेगा।
(घ) घड़े का ठंडा पानी पिलाइए।

6. गार — मददगार यादगार
ची — संदूकची अफीमची
वान — ज्ञानवान धनवान
खोर — आदमखोर हरामखोर
दार — जोरदार ईमानदार

7. **अर्थ** — सर्वाधिक प्रिय होना।
वाक्य-प्रयोग — दशरथ को राम प्राणों से प्यारे थे।
अर्थ — जीवन को संकट में डालना।
वाक्य-प्रयोग — हमारे सैनिक अपने प्राण हथेली पर रखकर दुश्मनों का मुकाबला करते हैं।
अर्थ — मर जाना।
वाक्य-प्रयोग — हनुमान जी की मुष्टिका के एक प्रहार से लंकिनी के प्राणपखेरू उड़ गए।

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।
13. विद्यार्थी स्वयं करें।
14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

10. जीवन नहीं मरा करता है

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि बहुरूपिया जीवन जीने वालों तथा ढोंगी व्यक्तियों को भी संबोधित करते हुए कहता है कि दुख या हताशा किसी भी समस्या का निदान नहीं है इसलिए दुख करना व्यर्थ है, क्योंकि कुछ खिलौनों के खो जाने से बचपन का अंत नहीं होता।

(ख) **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि उन लोगों को संबोधित करता है जो निराशारूपी अंधकार की अवधि को और बढ़ाते जा रहे हैं और जीवन की आयु घटा रहे हैं। कवि ऐसे लोगों को आशावान बनने का संदेश देता है और कहता है कि इस प्रकार आशारहित होना व्यर्थ है। वह उपवन का उदाहरण देते हुए कहता है कि उपवन के जीवन में न जाने कितनी बार पतझड़ आता है किंतु उसका अंत नहीं होता। वह पुन: हरा-भरा हो जाता है।

3. (क) कवि ने 'मोती व्यर्थ लुटाने वालों' शब्द का प्रयोग दुखी और निराश लोगों के लिए किया है।

(ख) माली के उपवन लूटने पर भी फूल की सुगंध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ग) यदि कुछ लोग नाराज हो जाएँ, तो भी दर्पण का अस्तित्व नहीं समाप्त होगा।

(घ) थोड़े-बहुत पानी के बह जाने से सावन पर कोई असर नहीं पड़ता।

(ङ) माला के बिखर जाने से कवि का तात्पर्य है, संयुक्त लोगों या परिवारों का एकाकी रूप में परिवर्तित हो जाना। सभी को एक-न-एक दिन एक-दूसरे से अलग होना ही पड़ता है। जो कल होना था वह आज हो गया। अत: इस तरह समस्या स्वयं ही हल हो गई।

(च) पतझड़ के कोशिश करने पर भी उपवन नहीं मरता है। ऐसा इस प्रकार संभव होता है कि जब-जब पतझड़ आते हैं तब-तब पेड़ों के सारे पत्ते झड़ जाते हैं किंतु पुन: उनमें नए पत्ते आ जाते हैं और उपवन फिर से हरा-भरा हो जाता है। इस प्रकार उसका अंत नहीं होता।

(छ) 'दर्पण नहीं मरा करता है' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि व्यक्ति को सदैव आशावान रहना चाहिए। इसके लिए वह दर्पण का उदाहरण पेश करता है।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) उपमा अलंकार (ख) रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार

5.

विशेषण	**विशेष्य**
कच्ची	नींद
फटी	कमीज
फीकी	चाँदनी
टूटा	दर्पण

6. (क) आँख (ख) आँगन (ग) आँसू (घ) चाँदनी

7. धूप — बादलों की वजह से धूप अधिक नहीं लग रही है।
वस्त्र — आत्मा जीर्ण कायारूपी वस्त्र बदलकर पुन: नया धारण करती है।
पतझड़ — बरसात के बाद पतझड़ आता है।
आँसू — बेटी को विदा करते समय माँ के आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे।
मोती — सागर से गोताखोरों के द्वारा बड़ी मेहनत से मोती निकाला जाता है।

8.

नयन	**तत्सम**	आशा	**तद्भव**	आँख	**तद्भव**	अश्रु	**तत्सम**
व्यर्थ	**तत्सम**	आँगन	**तद्भव**	कमीज	**विदेशी**	पोथी	**देशज**
जिल्द	**विदेशी**	वस्त्र	**देशज**	खिलौना	**देशज**	बचपन	**देशज**
गगरी	**देशज**	पनघट	**देशज**	तट	**तत्सम**	तम	**तत्सम**

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें।
12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।
14. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. एक सिंड्रेला ऐसी भी

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i)

2. (क) भावार्थ—बेबी हाल्दार को अपनी रचना लिखते समय यह नहीं मालूम था कि लेखन में कैसे और किन शब्दों का चयन किया जाता है।

(ख) भावार्थ—अब बेबी हाल्दार को अपने बच्चे कामयाब करने हैं और उनके साथ-साथ अपनी भी एक पहचान बनानी है, जिसे लोग सदैव याद रखें।

3. (क) बेबी हाल्दार का बचपन बड़े ही अभाव और प्रताड़नाओं में बीता। बचपन में ही उनकी माँ मर गईं और तब से उन्होंने स्वयं को अपने पिता से पिटते ही देखा।

(ख) बेबी अपनी बदकिस्मती का जिम्मेदार अपनी अशिक्षा को मानती थी।

(ग) लेखिका ने बेबी हाल्दर को 'सिंड्रेला' इसलिए कहा, क्योंकि जिस तरह सिंड्रेला की जिंदगी एक परी ने बदल दी थी उसी तरह बेबी की जिंदगी को प्रो० प्रबोध कुमार ने नई दिशा दी।

(घ) किताब का नाम 'आलो-अंधारी' इसलिए रखा गया, क्योंकि बेबी की यादों में अभाव और प्रताड़ना भरी अनेक रातें ही जमा थीं।

(ङ) बेबी द्वारा लिखी गई कहानी को पढ़कर प्रो प्रबोध कुमार के आश्चर्य के ठिकाना न रहा।

(च) न्यूयॉर्क टाइम्स, इण्टरनेशनल हेराल्ड, ट्रिब्यून और क्रिश्चन मॉनिटर ने उनकी कहानी छापी।

(छ) प्रो० प्रबोध कुमार ने हाल्दार की पुस्तकों में रुचि देखकर उन्हें अपनी पिछली जिंदगी के बारे में आपबीती लिखने को कहा। हाल्दार ने अपने शब्दों में वह सब लिख डाला जो अब तक उनके साथ हुआ था। उनकी लिखी रचना 'आलो अंधारी' का कई भाषाओं में प्रकाशन हुआ। आज उनके पास सब कुछ है। इस तरह प्रो० प्रबोध कुमार के सहयोग से लिखी इस रचना ने उनका जीवन बदल दिया।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) **दूसरों** को देखकर काम मत करो। तुम **दूसरा** मार्ग चुन लो!
(i) सर्वनाम (✓) (ii) विशेषण (✓)

(ख) **अच्छे** लोग तो कम ही मिलते हैं। गेट्स **अच्छा** बोलते हैं।
(iii) विशेषण (✓) (iv) क्रियाविशेषण (✓)

5. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (ii) (ङ) (iii)

6. (क) तय— निश्चित— अपने अंदर यह तय कर लो कि परीक्षा में अच्छे अंक लाने हैं।
तह — परत — कपड़ों को तह लगाकर रखिए।

(ख) सजा — सजावट — माली ने बगिया फूलों से सजा रखी है।
सज़ा — दंड — गलती करने पर सज़ा मिलनी चाहिए।

(ग) साथ — संग — राम के साथ सीता भी वन को गईं।
सात — अंक — बच्चों, छः के बाद सात आता है।

7. (क) प्रश्नवाचक (ख) निषेधवाचक (ग) विधानवाचक
(घ) प्रश्नवाचक (ङ) विधानवाचक (च) निषेधवाचक

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

12. मेरा सबसे प्यारा ओलंपिक पदक

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iv)

2. (क) क्रोध से बुद्धि का क्षय होता है जिससे खिलाड़ी बार-बार गलतियाँ करना शुरू कर देता है।

(ख) 'कोई चीज तुमको खाए जा रही है।' इस बात से अभिप्राय है कि तुम अपने मन में किसी बात को लेकर घबराए हुए हो।

3. (क) जेसी ओवेंस अमेरिकन (नीग्रो) खिलाड़ी था।

(ख) जेसी 1936 बर्लिन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने आया था।

(ग) 'टेक ऑफ बोर्ड' किसी चीज के लिए एक निर्धारित रेखा है।

(घ) जब असली परीक्षा की घड़ी आई और लुज ने स्वयं अपना ही कीर्तिमान तोड़ डाला तब उसने जेस्सी को चोटी का प्रदर्शन करने के लिए बाध्य किया और जेसी ने 26 फुट $5\frac{5}{16}$ इंच का ओलंपिक कीर्तिमान बनाने वाली अंतिम छलाँग लगाई।

(ङ) जेसी ओवेंस ने जर्मन खिलाड़ी लुज लौग तथा उसकी शासक प्रजाति को यह दिखाने का निश्चय किया कि कौन कितना श्रेष्ठ है।

(च) जेसी ने लुज लौंग का वर्णन अपने शब्दों में करते हुए बताया है कि उसकी मित्रता सोने जैसी खरी थी जिसके सामने मेरे सारे स्वर्ण पदक महत्त्वहीन थे।

(छ) बर्लिन पहुँचकर जर्मन खिलाड़ी लुज लौंग के 26 फुट कूद के अभ्यास को देखकर जेसी चकित रह गया।

(ज) जेसी ओलंपिक गाँव में लुज लौंग को धन्यवाद देने के लिए उससे मिलने गया।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) हमारे बीच सच्ची **मित्रता** कायम हो चुकी थी।

(ख) मैं इस ओलंपिक प्रतिस्पर्द्धा में **विजयी** होऊँगा।

(ग) मैं इन बातों को लेकर बहुत **चिंतित** नहीं था।

(घ) उसकी बातों की **सच्चाई** ने मुझको झकझोरा।

(ङ) मैंने ओलंपिक कीर्तिमान बनाने वाली **अन्तिम** कूद लगाई।

5. (क) प्रदर्शन (पुल्लिंग), जीत (स्त्रीलिंग)
पहचान—क्रियाविशेषणों को देखकर।
(ख) आँखें (स्त्रीलिंग), चेहरा (पुल्लिंग)
पहचान—क्रियाविशेषणों को देखकर।
(ग) नतीजा (पुल्लिंग), कूद (स्त्रीलिंग)
पहचान—क्रिया को देखकर।
(घ) सच्चाई (स्त्रीलिंग), तनाव (पुल्लिंग)
पहचान—कारक चिह्नों को देखकर।

6. कीर्तिमान, प्रतिस्पर्द्धा, अनुत्तीर्ण, महत्त्वपूर्ण, सर्वोत्तम।

7. भावना, नजर, तौर-तरीका, आँख, मिनट, घंटा, बात, चीज।

8. उपसर्ग—प्र, प्र, अनु, अप, अति, अ, अन्, परि, प्र, प्र
मूलशब्द—जाति, शिक्षण, शासन, वाद, क्रमण, मान्य, उत्तीर्ण, स्थिति, दर्शन, गाढ़

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

13. विधाता की अनुपम रचना

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (i)

2. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि देश के कर्णधारों का आह्वान करते हुए प्रकृति को नष्ट होने से बचाने के लिए उन्हें पुकार रहा है। वे कहते हैं कि आओ हम सब मिलकर प्रकृति को नष्ट होने से बचाएँ। यह विधाता का अनुपम उपवन कहीं हमारी भूल से उजड़ न जाए, क्योंकि यह अमूल्य धन है। यह हमारा जीवन प्रकृति प्रदत्त जिन सुविधाओं का उपभोग करके संपूर्ण सुख का अनुभव करता है आज धीरे-धीरे वे सारी चीजें हमसे दूर होती जा रही हैं। इसके पीछे वह कौन-सी भूल है जो हम करते जा रहे हैं। इसलिए आओ हम सब मिलकर इस प्रकृतिरूपी अमूल्य गोद का संरक्षण करें और अपने जीवन की रक्षा करें।

3. (क) प्राणी और पौधों का प्राकृतिक चक्र हमें हमेशा मंत्रमुग्ध करता है।

(ख) पशु-पक्षी अपनी विशेषताओं के कारण आने वाली अशुभ घटनाओं का आभास पा लेते हैं।

(ग) भूकंप की भविष्यवाणी के लिए मनुष्य अपने द्वारा बनाए गए यंत्रों के अलावा पशु-पक्षियों के असाधारण व्यवहार पर भी निर्भर है।

(घ) सूर्य और चंद्र ग्रहण शुरू होने से पहले बंदर भोजन त्याग देते हैं।

(ङ) तोतों की अशुभ घटनाओं की पूर्व जानकारी की विशेषता के कारण प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान पेरिस के 'एफिल टॉवर' में तोतों को रखा गया था, ताकि ये हवाई हमले की पूर्व सूचना दे सकें।

(च) मनुष्य का प्रकृति के प्रति यह कर्त्तव्य है कि वह उसका संरक्षण करे।

(छ) यदि गाँवों से शहरों की ओर पलायन न होता तो गाँवों का रूप और भी मंत्रमुग्ध करने वाला होता। सारी व्यवस्थाएँ वहीं पहुँच जातीं और कोई अपनों से दूर ना जाता। गाँवों का विकास हो जाता।

(ज) यदि प्रदूषण को दूर करने की जिम्मेदारी हमें दे दी जाए तो हम सबसे पहले इसकी शुरुआत वृक्षारोपण से करेंगे।

❐ व्याकरण-बोध

4.

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
मधुर	मधुतर	मधुरम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम

5. अग्नि = आग, प्रकाश।

आग वह होती है जो ईंधन द्वारा प्रज्वलित की जाती है।

प्रकाश वह होता है जिसके माध्यम से अँधेरा दूर भगाया जाता है।

6.

परिपूर्ण	— प् + अ + र् + इ + प् + ऊ + र् + ण् + अ
सूर्यास्त	— स् + ऊ + र् + य् + आ + स् + त् + अ
आश्चर्य	— आ + श् + च् + अ + र् + य् + अ
वर्षा	— व् + अ + र् + ष् + आ
सौहार्द	— स् + औ + ह् + आ + र् + द् + अ

7.

विशाल × तुच्छ	सूर्यास्त × सूर्योदय	प्रथम × अंतिम
प्राकृतिक × अप्राकृतिक	त्यागना × संग्रहण करना	मानव × दानव
सुरक्षित × असुरक्षित	कर्तव्य × अकर्तव्य	सामान्य × असामान्य
लुप्त × प्रकट	पूर्व × उत्तर	व्यक्तिगत × सार्वजनिक

8. मन — चित्त, एक तौल। | कर — हाथ, किरण।
पर — पंख, दूसरा। | पूर्व — पहला, एक दिशा।
ग्रहण — लेना, कैद करना।

9. छटा — छवि, | ओर — तरफ।
छठा — पाँच के बाद का अंक | और — दूसरा।

10. हरे-हरे, धीरे-धीरे, छोटे-छोटे। (पूर्ण दुरुक्त)
पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, उछल-कूद, क्रिया-कलाप, फलते-फूलते। (अपूर्ण दुरुक्त)

11. (ख) सरकारी संस्थाओं के द्वारा पशु-पक्षियों के संरक्षण में काम किया जाता है।
(कर्मवाच्य)
(ग) इन अबोध जीव-जन्तुओं से मनुष्य को सावधान किया जाता है।
(कर्मवाच्य)

❐ योग्यता-विस्तार

12. विद्यार्थी स्वयं करें।
13. विद्यार्थी स्वयं करें।
14. विद्यार्थी स्वयं करें।
15. विद्यार्थी स्वयं करें।
16. विद्यार्थी स्वयं करें।
17. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

14. कुंडलियाँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iii)

2. (क) बिना विचारे (ख) घमंड (ग) वाणी (घ) विनम्र
(ङ) गुणों

3. (क) दौलत सबकी परीक्षा अतिथि की भाँति लेती है।
(ख) हमें अपने अंदर ऐसे गुणों का विकास करना चाहिए जो सभी को अच्छे लगें।
(ग) गुणग्राही लोगों की यह विशेषता है कि वे गुणी लोगों का ही चुनाव करते हैं।
(घ) बिना विचारे कार्य करने से निम्नलिखित हानियाँ हो सकती हैं—
(i) बाद में पछताना पड़ता है।
(ii) जग हँसाई होती है।
(iii) मन में चिंता बढ़ जाती है।
(iv) खान-पान, सम्मान तथा वातावरण कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

(ङ) दौलत पाकर अभिमान करना उचित इसलिए नहीं है, क्योंकि यह एक जगह स्थिर नहीं रहती। आज आपके पास है तो कल किसी और के पास होगी।

(च) धन-दौल को मेहमान की संज्ञा इसलिए दी गई है, क्योंकि जिस तरह मेहमान किसी के यहाँ सदैव ही नहीं बने रहते उसी प्रकार धन-दौलत भी किसी के पास सदैव नहीं बनी रहती।

(छ) काग और कोकिला में यह अंतर होता है कि काग की आवाज़ कर्कस होती है तथा कोयल की आवाज़ मधुर होती है।

❒ व्याकरण-बोध

4. गिरिधर — व्यक्तिवाचक　　कवि — जातिवाचक
जग — व्यक्तिवाचक　　दौलत — जातिवाचक
अभिमान — भाववाचक　　पाहुन — जातिवाचक

5. अभिमान — दुर्योधन को सौ भाइयों का अभिमान था।
दौलत — संतोष सबसे बड़ी दौलत है।
ग्राहक — सच्चा व्यापारी ग्राहक को देवता मानता है।
चंचल — मन बड़ा चंचल है।

❒ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

15. मशीनी मानव

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv)　　(ख) (i)　　(ग) (iii)

2. (क) माहीगीर को विचारक द्वारा पीछा करने का डर था।

(ख) किनारे पर आकर माहीगीर ने जल्दी से अपनी नाव खोली और उसे तूफानी पानी में खेना शुरू कर दिया।

(ग) पलटकर देखने पर तेज आग की लपटों ने उसे चौंका दिया। उसने देखा कि विचारक द्वारा बनाई गई दुनिया को विचारक स्वयं ही अपने हाथों से जला रहा है।

3. (क) मशीनी मानव के गुम हो जाने पर कई अनुमान लगाए जा रहे थे। किसी का ख्याल था कि आदमी से ज्यादा दिमाग रखने के कारण उसका दिमाग फट गया होगा। किसी का ख्याल था कि वह किसी अन्य नक्षत्र में चला गया होगा।

(ख) विचारक द्वारा बसाई जाने वाली दुनिया प्रेम-स्नेह तथा बच्चों से रहित होती।

(ग) वैज्ञानिकों ने यह सोचकर दूसरा मशीनी मानव नहीं बनाया कि जब पहले वाले ने ऐसा करतब दिखाया है, तो दूसरा न जाने क्या-क्या जुल्म ढाएगा।

(घ) टापू के किनारे पहुँचकर माहीगीर अलग तरह के लोगों द्वारा बसी दुनिया को देखकर हैरान रह गया।

(ङ) मशीनी मानव के गिरोह के लोग लकड़ी काटने वाले लड़की के, लोहा खोदने वाले लोहे के, रूई धुनने वाले रूई के तथा कोयला बनाने वाले कोयले के बने हुए थे। ये लोग एक-दूसरे से अलग थे।

(च) मशीनी मानवों की दुनिया वास्तविक दुनिया के लोगों से इस तरह भिन्न थी कि वहाँ के लोगों को खाना, पीना, ठिठुरना, साँस लेना आदि की कोई आवश्यकता नहीं थी।

(छ) तथा (ज) विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ व्याकरण-बोध

4. नाक-कान — नाक और कान | नदी-नाले — नदी और नाले
ग्रह-नक्षत्र — ग्रह एवं नक्षत्र | लोहा-लक्कड़ — लोहा तथा लक्कड़
रुई-कोयला — रुई और कोयला | घर-द्वार — घर और द्वार

5. सिर धुनना — जब लालची व्यापारी के हाथ से सोने का कटोरा निकल गया तो वह सिर धुनकर रह गया।

चेहरा खिलना — परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होने का समाचार सुनकर मोनी का चेहरा खिल गया।

आँखें जलना — पड़ोसी की प्रगति देखकर ईष्यालु अनिल की आँखें जल उठीं।

6. क्ष — क् + ष् + अ = कक्षा | त्र — त् + र् + अ = त्रिशूल
ज्ञ — ज् + ञ् + अ = ज्ञान | श्र — श् + र् + अ = श्रम
शृ — श् + ऋ = शृंगार

7.

टहनी	— टहनियाँ	चेहरा	— चेहरे	घोषणा	— घोषणाएँ
गाड़ी	— गाड़ियाँ	कपड़ा	— कपडे	जरूरत	— जरूरतें
मछली	— मछलियाँ	बच्चा	— बच्चे	तस्वीर	— तस्वीरें

8.

पेड़	— वृक्ष,	विटप	आजादी	— स्वतंत्रता,	मुक्ति
नाव	— नौका,	बेड़ा	मछली	— मीन,	मत्स्य
समुद्र	— सागर,	सिंधु	हाथ	— कर,	हस्त
शरीर	— तन,	गात	जमीन	— धरती,	भूमि

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

16. यह मेरा, यह मीत का

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

2. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

3. (क) कथन का भाव यह है कि हमारे अध्यापक उन अध्यापकों में से एक थे जो कठिन-से-कठिन कार्य को भी आसानी से करवा लेते थे।

(ख) कथन का भाव यह है कि जिस प्रकार सुदामा को द्वारिका से लौटने पर रंक से राजा बन जाने का आश्चर्य हुआ था उसी प्रकार मंत्री को भी अपने पुत्र को समझ आने पर आश्चर्य हुआ।

(ग) कथन का भाव यह है कि व्यापारी के भाग्य पर पत्थर पड़ गए अर्थात् भाग्य दुर्भाग्य में बदल गया।

(घ) कथन का भाव यह है कि व्यापारी की दशा फिर से सुधर गई।

4. (क) धनी बालक में यह विशेष गुण था कि उसके अपने गरीब मित्र के लिए दिल था।

(ख) धनी बालक ने अपने मित्र के लिए खाने-पहनने और पढ़ाई-लिखाई के सारे खर्चे की व्यवस्था करवाई।

(ग) निर्धन मित्र की शिक्षा का यह परिणाम निकला कि वह पढ़-लिखकर एक प्रकांड विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

(ङ) निर्धन मित्र की विद्वता की ख्याति सुनकर उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया और उसकी विद्वता पर मुग्ध होकर उसे अपना राजमंत्री बना लिया।

(च) मंत्री ने राजा से सौ मुद्राएँ दान में दिलाकर अपने मित्र की सहायता की।

(छ) व्यापारी मित्र ने मंत्री के पुत्र को यह शिक्षा दी कि अगर तुम एक-एक ज्ञान को, एक-एक विद्या और गुण को अपना समझ लो तथा अपने लिए व अपने मित्रों के लिए दिल और दिमाग में रखते जाओ, तो तुम भी मेरी तरह ज्ञान और गुण के लखपति बन जाओगे।

(ज) इस कहानी का मुख्य संदेश यह है कि हमें एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। सहयोग से आपस में प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ता है।

❐ व्याकरण-बोध

5. पूर्णिमा — प् + ऊ + र् + ण् + इ + म् + आ
व्यापारी — व् + य् + आ + प + आ + र् + ई
मुद्राएँ — म् + उ + द् + र् + आ + ए + अँ

6. व् + य = व्य — व्यवस्था व्यवहार व्यस्त
द् + र = द्र — भद्र दरिद्र शूद्र
त् + य = त्य — त्याग त्योहार सत्य
क् + त = क्त — सूक्ति उक्ति भक्त

7. (क) जातिवचाक (ख) जातिवाचक (ग) व्यक्तिवाचक
(घ) जातिवाचक (ङ) व्यक्तिवाचक (च) भाववाचक
(छ) भाववाचक

8.

योजना	— योजनाएँ	कला	— कलाएँ
मुद्रा	— मुद्राएँ	सुविधा	— सुविधाएँ
लता	— लताएँ	कथा	— कथाएँ
महिला	— महिलाएँ	व्यवस्था	— व्यवस्थाएँ

9. उन्नति — प्रगति मदद — सहायता
अतिथि — मेहमान शिक्षक — अध्यापक

10. मत → नहीं — बेटा शहर मत जाओ।
मत → राय (विचार) — कृपया, उचित मत देकर मेरा मार्गदर्शन करें।
नाना → माँ के पिता — छुट्टियों में मैं नाना के घर जाऊँगी।
नाना → अनेक — योगासन नाना प्रकार की बीमारियों का निदान है।
लाख → गणना की संख्या — राज्य सरकार ने सड़क-निर्माण के लिए दस लाख रुपये दिए।
लाख → एक पदार्थ जिससे चूड़ियाँ और खिलौने बनते हैं। — दुर्योधन ने लाख के घर में पांडवों को जलाने की योजना बनाई।

11. (क) दाने-दाने को मुहताज (ख) मुँह लटकाकर
(ग) हाथ बँटाने

12. (क) वह (ख) मैं (ग) उसने (घ) मैं
(ङ) मुझे (च) वह

❐ योग्यता-विस्तार

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

15. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

17. निष्ठुर अनुकंपा

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii)

2. (क) (3) (ख) (2) (ग) (4) (घ) (1) (ङ) (5)

3. (क) कुलीन परिवार के निर्वाह का साधन सहिजन का पेड़ था।

(ख) कुलीन परिवार के सदस्यों द्वारा नौकरी न करने का परिणाम यह हो रहा था कि घर की गरीबी दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। घर में कुछ भी नहीं बचा था और खाने के लाले पड़ गए थे।

(ग) रिश्तेदार के सामने भोजन के समय भाइयों ने परिवार की बुरी दशा को छिपाने के लिए अपने-अपने ढंग से बहाना बना दिया।

(घ) मेहमान ने सहिजन के पेड़ को यह सोचकर काटा कि यह पेड़ ही है जो इनकी काहिली और बुजदिली का कारण बना हुआ है। इसके कट जाने पर ये मजबूर होकर कोई-न-कोई कार्य करेंगे और इनके अच्छे दिन आ जाएँगे।

(ङ) जीवन-निर्वाह का आधार सहिजन के पेड़ के कट जाने क कारण भाइयों के लिए नौकरी करना आवश्यक हो गया था।

❒ व्याकरण-बोध

4. कर्त्ता कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, सम्बन्ध कारक, कर्म कारक, कर्त्ता कारक।

5.

देहाती	— देहातिन	ग्वाला	— ग्वालिन
पुजारी	— पुजारिन	मालिक	— मालकिन
दूल्हा	— दुलहिन	सुनार	— सुनारिन

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. कीमती, प्रतिष्ठित, बनावटी, खानदानी, पारिवारिक, जानकार।

8. (i) अपने विषय को **ध्यानपूर्वक** पढ़िए।

(ii) फिसलन भरे रास्ते में **धीरे-धीरे** चलिए।

(iii) पहाड़ों के बीच झरना **तेजी से** गिरता है।

(iv) ऊँचाई वाले खेतों पर पानी **रुक-रुककर** बहता है।

(v) मुकुल की तबीयत **अचानक** खराब हो गई।

9. दूरदर्शिता, बदकिस्मती, गरीबी, दुश्मनी, दुष्टता, रिश्तेदारी।

10. शरीक — शामिल, मिला हुआ, साझी।
तकलीफ — कष्ट, परेशानी, दिक्कत।
मेहमान — पाहुन, अतिथि, आगन्तुक।
दोस्त — मित्र, सखा, मीत।
फिक्र — चिंता, परवाह, ध्यान।
कीमत — लागत, मूल्य, दाम।

❒ योग्यता-विस्तार

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

18. हिंदी जन की बोली है

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iii)

2. (क) उच्च वर्ग की प्रिय अंग्रेजी।
(ख) नए अर्थ के रूप धारती।
(ग) भरी-पूरी हों सभी बोलियाँ।
(घ) वर्ग-भेद को खत्म करेगी।
हिंदी वह हमजोली है।

3. (क) भाव—हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा है। हम अपने देश में विदेशी सौत अर्थात् अंग्रेजी भाषा को रानी का दर्जा नहीं देना चाहते।

(ख) भाव—आज अंग्रेजी बड़े लोगों की प्रिय भाषा जरूर बन गई है, किंतु फिर भी हिंदी सम्पूर्ण जनों की बोली है। हिंदी ही मात्र ऐसी भाषा है जो सबको अपनाकर इस ऊँच-नीच के भेद-भाव को समाप्त करेगी।

4. (क) हिंदी सबको एक डोर में बाँधती है।
(ख) 'सौत विदेशी' कवि ने अंग्रेजी भाषा को कहा है।
(ग) हिंदी हमारी मातृभाषा है। इसे हम कैसे भी तोड़-मोड़कर बोल सकते हैं। हम अपने मन के भावों को अपनी निज भाषा में भी व्यक्त कर सकते हैं, इसलिए हिंदी मधुर व मनभावन है।

(घ) भेद-भाव को समाप्त करने में हिंदी इसलिए सहायक है, क्योंकि हिंदी हमारी संस्कृति है जो सभी भाषाओं तथा सभी संस्कृतियों को शरण देती है। यह सभी भाषाओं का संगम है।

(ङ) विद्यार्थी स्वयं करें।

(च) विश्व को एक सूत्र में पिरोए रखने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी भाषा अन्य सभी भाषाओं को बहन मानती है। यह भेद-भावों को खत्म करती है।

(छ) कविता में आए बंगाली और मराठी भाषा के क्रमश: शब्द हैं—भालो-बाशी तथा खाली-पीली बोम मारती है।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) समदर्शी (ख) संगम (ग) अनुपम (घ) चौरंगी
(ङ) चौपाटी (च) कृतज्ञ

6.

(क) वर्ग-भेद	— वर्ग का भेद	तत्पुरुष समास
(ख) प्रीति-पियासी	— प्रीति की प्यासी	तत्पुरुष समास
(ग) पूरब-पश्चिम	— पूरब और पश्चिम	द्वन्द्व समाज
(घ) कमल-पंखुरी	— कमल की पंखुड़ी	तत्पुरुष समास

7.

देशज — माटी	प्रीति-पियासी	हमजोली	भालो-बाशी
तत्सम — जन	मधुर	उच्च	नाद
तद्भव — रानी	सौत	धाती	कमल-पंखुरी

8.

सागर	— सिंधु	समुद्र
नदी	— सरिता	तटिनी
अनुपम	— अद्भुत	अनोखा
कामना	— लालसा	इच्छा

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐